

श्री गुरु चालीसा

MANISH SEKHER

Advocate (High Court)

Chamber No. 115, New Building
Allahabad

Mob: 9450718190, 05497-252268

आशीर्वाद

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

Manish

© मनस चेतना केन्द्र

संकलन, सम्पादन : नन्दकिशोर श्रीमाली

प्रकाशक

मनस चेतना केन्द्र

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

मूल्य : 5/-

फोटो, कम्पोजिंग

सेटिंग : राजेश मुद्गिल

मुद्रक : श्री बजरंग बली ग्राफिक्स
हाऊसिंग बोर्ड के सामने
नारनौल

फोन : 01282- 255955, 253223, 253215

फैक्स : 255955



गुरुदेव
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

भूमिका.....

जीवन का उत्स धन कमाने में नहीं, अपितु जीवन के सभी आयामों को प्रसन्नता पूर्वक बिना राग-द्वेष, छल-कपट के स्पर्श करते हुए जीने में है, और यह सब कुछ प्राप्त हो सकता है आध्यात्मिक वातावरण से आज व्यस्तत के इन क्षणों में यह सम्भव ही नहीं हो पाता, कि हम अपने दैनिक पूजा क्रम में ज्यादा से ज्यादा समय दे सकें। ऐसी स्थिति में कुछ ऐसे स्तोत्रों का निर्माण किया जाता है, जिनके पाठ करने मात्र से ही साधक की मनःइच्छा पूर्ण हो सके, उसे मानसिक शांति प्राप्त हो सके तथा आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही साथ उसकी भौतिक उन्नति भी हो सके।

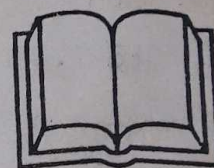
शिष्य के जीवन की उपलब्धि मात्र गुरु है, उसकी प्रातः गुरु के स्मरण से होती है, तो उसकी निद्रा भी गुरु के स्मरण रूपी गोद में होती है... इन्हीं सब बातों पर विचार कर हम यह गुरु चालीसा आपको सौंपते हुए प्रसन्नता अनुभव कर रहे हैं।

इसका मात्र पाठ करने से ही मन में असीम शांति और पवित्रता का तो बोध होता ही है, और साथ ही साथ उसके जीवन में भौतिक उन्नति भी प्रारम्भ हो जाती है। यह लघु पुस्तिका शिष्यों के लिए एक अनमोल ग्रंथ है, धरोहर है, अतः वे इसका पाठ कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करें, इन्हीं मनोभावनाओं के साथ यह पुस्तिका शिष्यों के लिए एक अनमोल ग्रंथ है, धरोहर है, अतः वे इसका पाठ कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करें, इन्हीं मनोभावनाओं के साथ यह पुस्तिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

श्री गुरु चालीसा



दोहा



प्रनवरुं प्रथम गुरु चरण, बुद्धि ज्ञान गुन खान।
श्री गणेश शारद सहित, बसो हृदय में आन।।
अज्ञानी मतिमन्द मैं, है गुरु स्वामि सुजान।
दोषों से मैं भरा हुआ हूँ, तुम हो कृपा निधान।।

चौपाई

जय नारायण जय निखिलेश्वर।
विश्व प्रसिद्ध अखिल तंत्रेश्वर॥ 1॥

यंत्र-मंत्र विज्ञान के ज्ञाता।
भारत भू के प्रेम प्रेणता॥ 2॥

जब जब होई धरम की हानि।
सिद्धाश्रम ने पढये ज्ञानी॥ 3॥

सच्चिदानन्द गुरु के प्यारे।
सिद्धाश्रम से आप पधारें॥ 4॥

उच्चकोटि के ऋषि-मुनि स्वेच्छा।
ओय करन धरम की रक्षा॥ 5॥

अबकी बार आपकी बारी।
त्रहि-त्रहि हे धरा पुकारी॥ 6॥

मरुधर प्रान्त खरंटिया ग्रामा।
मुल्तानचन्द पिता कर नामा॥ 7॥

शेषशायी सपने में आये।
माता को दर्शन दिखलाये॥ 8॥

रूपादेवि मातु अति धार्मिक
जनम भयो शुभ इक्कीस तारीख॥ 9॥

जन्म दिवस तिथि शुभ साधक की।
पूजा करते आराधक की॥ 10॥

जन्म वृत्तन्त सुनाय नवीना।
मंत्र नारायण नाम करि दीना॥ 11॥

नाम नारायण भव भय हारी।
सिद्ध योगि मानव तन धारी॥ 12॥

ऋषिवर ब्रह्म तत्त्व से ऊर्जित।
आत्म स्वरूप गुरु गौरवान्वित॥ 13॥

एक बार संग सखा भवन में।
करि स्नान लगे चिन्तन में॥ 14॥

चिन्तन करत समाधी लागी।
सुध-बुध हीन भये अनुरागी॥ 15॥

पूर्ण करी संसार की रीती।
शंकर जैसे बने गृहस्थी॥ 16॥

अद्भुत संगम प्रभु माया का।
अवलोकन है विधि छाया का॥ 17॥

युग-युग से भव बन्धन रीती।
जहां नारायण वहीं भगवती॥ 18॥

सांसारिक मन हुई अति ग्लानी।
तब हिमगिरी गमन की ठानी॥ 19॥

अठारह वर्ष हिमालय घूमे।
सर्व सिद्धियां गुरु पग चूमें॥ 20॥

त्याग अटल सिद्धाश्रम आसन।
करम भूमि आये नारायण॥ 21॥

धरा गगन ब्रह्माण्ड में गूंजी।
जय गुरुदेव साधना पूंजी॥ 22॥

सर्व धर्महित शिविर पुरोधा।
कर्मक्षेत्र के अतुलित योधा॥ 23॥

हृदय विशाल शास्त्र भण्डारा ।
भारत का भौतिक उजियारा ॥ 24 ॥

एक सौ छप्पन ग्रंथ रचयिता ।
सिद्धी साधक विश्व विजेता ॥ 25 ॥

प्रिय लेखक प्रिय गूढ़ प्रवक्ता ।
भूत-भविष्य के आप विधाता ॥ 26 ॥

आयुर्वेद ज्योतिष के सागर ।
षोडश कला युक्त परमेश्वर ॥ 27 ॥

रतन पारखी विघन हरन्ता ।
सन्यासी अनन्यतम सन्ता ॥ 28 ॥

अद्भुत चमत्कार दिखलाया ।
पारद का शिवलिंग बनाया ॥ 29 ॥

वेद पुराण शास्त्र सब गाते ।
पारेश्वर दुर्लभ कहलाते ॥ 30 ॥

पूजा कर नित ध्यान लगावे ।
वो नर सिद्धाश्रम में जावे ॥ 31 ॥

चारों वेद कंठ में धारे ।
पूजनीय जन-जन के प्यारे ॥ 32 ॥

चिन्तन करत मंत्र जब गायें ।
विश्वामित्र वशिष्ठ बुलायें ॥ 33 ॥

मंत्र नमो नारायण सांचा ।
ध्यानत भागत भूत-पिशाचा ॥ 34 ॥

प्रातः काल करहिं निखिलायन ।
मन प्रसन्न नित तेजस्वी तन ॥ 35 ॥

निर्मल मन से जो भी ध्यावे ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-सम्पति पावे ॥ 36 ॥

पाठ करहिं नित जो चालीसा ।
शान्ति प्रदान करहि योगीसा ॥ 37 ॥

अष्टोत्तर शत पाठ करत जो ।
सर्व सिद्धियां पावत जन सो ॥ 38 ॥

श्री गुरु चरण कमल की धारा ।
सिद्धाश्रम साधक परिवारा ॥ 39 ॥

जय-जय-जय आनन्द के स्वामी ।
बारम्बार नमामि नमामी ॥ 40 ॥

दोहा

निखिल विनय सादर करें,
साक्षी सारे देव ।
गुरु साधक मन प्राण से,
बोलो जय गुरुदेव ॥

इसका मात्र पाठ करने से ही मन में असीम शांति और पवित्रता का तो बोध होता ही है, और साथ ही साथ जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी प्रारम्भ हो जाती है ।

प्रत्येक साधक एवं शिष्य को चाहिए, कि वह इस गुरु चालीसा को अपने दैनिक पूजा क्रम का एक भाग बना लें ।

गुरु स्वतन



पूर्ण सतान्ये परिपूर्ण रूपं,
गुरुवै सतान्यं दीर्घो वदान्यम्।
आविर्वतां पूर्ण मदैव पुण्यं,
गुरुवै। शरण्यं गुरुवै शरण्यम्॥

त्वमेव माता च

न जानामि योगं न जानामि ध्यानं,
न मंत्रं न तंत्रं न योगं क्रियान्वै।
न जाजामि पूर्ण न देहं न पूर्व,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम्॥

त्वमेव माता च

अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो,
महाक्षीण दीनः सदा जाड्य वक्त्रः।
विपत्ति प्रविष्टः सदाहं भजामि,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम्॥

त्वमेव माता च

त्वं मातृ रूपं पितृ स्वरूपं,
आत्म स्वरूपं प्राण स्वरूपम्।
चैतन्य रूपं देवं दिवन्त्रं,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम्॥

त्वमेव माता च

त्वं नाथ पूर्ण त्वं देव पूर्ण,
आत्मं च पूर्ण ज्ञानं च पूर्णम्।
अहं त्वां प्रपन्नं प्रपद्ये सदाहं,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम्॥

त्वमेव माता च

मम अश्रु अर्घ्यं पुष्पं प्रसुनं,
देहं च पुष्पं शरण्यं त्वमेवम् ।
जीवाद्बदां पूर्णं मदैव रूपं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुवै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

आवाहयामि आवाहयामि,
शरण्यं शरण्यं सदाहं शरण्यम् ।
त्वं नाथ मेवं प्रपद्ये प्रसन्नं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

न तातो न माता न बन्धुनं भाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममेवं,
गुरुर्वै त्वमेवं गुरुवै त्वमेवम् ॥

त्वमेव माता च

आबद्ध रूपं अश्रु प्रवाहं,
धीयां प्रपद्ये हृदयं-वदान्ये ।
देहं त्वमेवं शरण्यं त्वमेवं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ।
एको हि नाथं एको हि शब्दं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

कान्तां न पूर्व वदान्यै वदान्यं,
कोऽहं सदान्यै सदाहं वदामि ।
न पूर्व पतिर्वै पतिर्वै सदाहं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

न प्राणों वदावै न देहं नवाऽहं,
न नेत्रं न पूर्व सदाऽहं वदान्ये ।
तुच्छं वदां पूर्व मदैव तुल्य,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

पूर्वो न पूर्व न ज्ञानं न तुल्यं,
न नारि नरं वै पतिवै न पत्यम्
को कत् कदा कुत्र कदैव तुल्यं,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

गुरुवै गतान्यं गुरुवै शतान्यं,
गुरुवै वदान्यं गुरुवै कथान्यम् ।
गुरुमेव रूप सदाहं भजामि,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम् ॥

त्वमेव माता च

आत्रं वतां अश्रु वदैव रूपं,
ज्ञानं वदान्यै परिपूर्ण नित्यम् ।
गुरुवै ब्रजाहं गुरुवै भजाहं,
गुरुवै शरण्यं गुरुवै शरण्यम् ॥

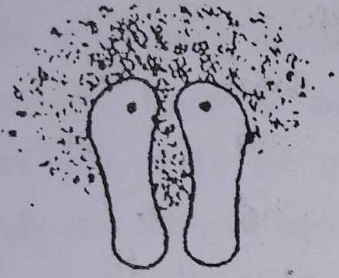
त्वमेव माता च

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम देव देव ॥

त्वमेव माता च

यह स्तवन एक दुर्लभ स्तवन है, प्रत्येक उच्च साधक को चाहिए कि इस स्तवन को कण्ठस्थ कर ले । जब कभी भी गुरु पूजन किया जाता है, तो इस स्तवन का पाठ गुरु आवाहन के बाद अत्यन्त विगलित कण्ठ से किया जाता है । इसके पाठ करने से गुरु प्रसन्न होते हैं, और उसकी आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों इच्छाओं की पूर्ति करते हैं ।

गुरु पादुका पंचक



ॐ नमो गुरुभ्यो गुरु पादेकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
 आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ॥१॥
 ऐंकार हींकार रहस्ययुक्त श्रीकारगूढार्थ महाविभूत्या ।
 ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२॥
 होत्राग्नि होत्राग्निहविष्यहोतृ होमादिसर्वाकृतिभासमानम् ।
 यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥
 कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां विवेक वैराग्य निधिप्रदाभ्याम् ।
 बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥४॥
 अनन्त संसारसमुद्रतार नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्याम् ।
 जाड्यादिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥५॥

निखिलेश्वरानंद स्तुति

ॐ नमस्ते सते सर्व लोकाश्रयाय नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय ।
 नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ॥
 त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्-कारणं विश्व-रूपम् ।
 त्वमेकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहृत्, त्वमेकं परं निश्चलं निर्थिकल्पम् ॥
 भयाना भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
 महोच्चैः पदानां निवन्तुः त्वमेकं, परेषां परं रक्षकं रक्षकाणाम् ॥
 परेशं प्रभो । सर्व-रूपाविनाशिन्, अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
 अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्त्व, जगद्-मासकाधीश पायादपायात् ॥
 एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ॥
 कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गणश्च ॥
 नमस्ते-नमस्ते विमो! विश्वमूर्ते । नमस्ते-नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यः ॥
 तदेकं रमरामस्तदेकं जपामः तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
 तदेकं निधानं तपो योगगम्यः नमस्ते-नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यः ॥
 तदेकं रमरामस्तदेकं जपामः तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
 तदेकं निधानं निरालम्बरुपं भवाम्बोधि पोतं शरण्यं ब्रजामः ॥
 यं ब्रह्मा वरुणोन्द्ररुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
 वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ॥
 ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनी ।
 यश्चान्तं न विदुः सुरासुरगण देवाय तस्मै नमः ॥

सच्चिदानन्द स्तवन

सिद्धाश्रमोऽयं परमं विदूषं, ज्ञानं च दिव्यं महतं महीतं।
 आतेव नित्यं परमं पवित्रं, दिव्यात्म रूपं प्रणमं नमामि॥
 आविर्हताम् परमं वदेवं, ऋग्वेद रूपं ज्ञेयं स्वरूपं।
 यज्ञोत्पत्तां पूर्णं मदैव नित्यं, विज्ञान रूपं सत् चित् स्वरूपं॥
 ज्ञानवदा च वदितं ब्रह्माण्ड रूपं, नित्यं वदैव वहितं सहितं सदेवं।
 शब्दोवतां व्यर्थं मदैव नित्यं, किं पूर्व पर वहितं महितं च नित्यं।
 शिष्योवतां वै परिपूर्णरूपं, विहल स्वरूपं आत्मान् नित्यं।
 आज्ञोवताम् वै परमं पवित्रं, पूर्णत्व रूपं गुरुवं नमामि॥
 स्मरणं वदेवं वदितं वदेवं, गुरुदेव नित्यं महिनां स्वरूपम्॥
 आत्मोच्छ्वास वहितं सहितं सदेवं, शबेर्यतां वै गुरुवे परेशं॥
 न ताता न माता, न बन्धु न भ्राता,
 न रूपं न ज्ञानं, न चिन्त्यं न नित्यं।
 न योगं न मंत्रां न तंत्रां न नित्यं,
 सत्, चित्, स्वरूपं मंत्रां च तंत्रां॥

प्रार्थना

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्या पुष्टिं श्रियं बलम्।
 तेजः आयुष्यमारोग्यं देहि में हव्यवाहन॥
 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
 सर्वे मद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

आरती श्री जगदीश्वर जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
 भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।
 जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का॥
 सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥
 मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
 तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी।
 तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तरयामी।
 पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥
 तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता।
 मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥
 तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
 किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥

दीनबन्धु दुःखाहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
 अपने हाथ उठाओ, द्वार (शरण) पड़ा तेरे ॥
 विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
 श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥
 तन-मन-धन और जीवन, सब कुछ है तेरा ।
 तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥
 तुम हो आदि अनादि, भक्तन हितकारी ।
 हम सब शरण तुम्हारी, काटो यम फांसी ॥
 आरती गाऊं, गाय सुनाऊं, इतनी नहीं है शक्ति ।
 कृपा दृष्टि प्रभु राखो, दीजो चरणों में भक्ति ॥
 पारब्रह्म परमेश्वर की आरती, जो कोई नर गावे ।
 ज्योरा मन शुद्ध होय जावे, ज्योरा पाप परा जावे ॥
 ज्योरा सुख-सम्पत्ति आवे, ज्योरा दुःख-दारिद्र्य जावे ।
 वो तो भक्ति-मुक्ति पावे, ज्योरा घर लक्ष्मी आवे ॥
 भजत शिवानन्द स्वामी, रटत भोलानन्द स्वामी ।
 इच्छा फल पावे, ॐ जय जगदीश हरे ॥

वन्दना

कर्पूरगीरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
 सादा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥
 नारायणो त्वं निखिलेश्वरो त्वं, माता-पिता गुरु आत्मा त्वमेवं ।
 ब्रह्मा त्वं विष्णु रुद्रारत्वमेवं, सिद्धाश्रमो त्वं गुरुवं प्रणम्यम् ॥

निखिलेश्वर आरती

जय सन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं,
 जय-जय सन्यस्त्वं मा जय भगवद् रूपं ।
 ॐ जय-जय-जय निखिलं ।
 हिमालये निवसति मुक्तं प्रकृति त्वां मध्ये,
 विचरति गिरिवर गहने गहरसहि मुदितां
 ॐ जय-जय-जय निखिलं ।
 शान्तं वेशं भाव्यं अद्वितीय रूपं,
 व्याघ्रं वज्र वहन्तुं वक्षस्थल त्वं त्वं ।
 ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

वेद पुराण शास्त्रं ज्योतिष् महितत्वं,
मंत्र-तंत्र उद्धारय साध्यं सहि सहितं ।

ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

ऋषि दिव्यं देह भस्मं रुदाक्षं सहितं,
विचरति निशिदिन प्राप्ते, धन्य मही युक्तं ।

ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

सिद्धाश्रम सप्राणं मंत्रां स्त्राष्टत्वं,
लक्षं लक्ष निहारत अद्भ्य अधि युक्तं ।

ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

भाव्य विशालं नेत्र भालं तेजस्वं,
लक्षं शिष्य ध्यायति निखिलेश्वर गुरुवम् ।

ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

संगीत युक्तं आरार्तिक पठत् यदि शृणुतं,
गुरु मोद वर प्राप्तुं, शिष्यत्वं पूर्णं ।

ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

जय सन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं,
जय-जय सन्यस्तवं मा जय भगवद् रूपं ।

ॐ जय-जय-जय निखिलं ।

वन्दना

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अशितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धु पात्रे,

गुरतरुवरशाखा लेखिनी पत्रमूर्ती ।

लिखति तव गुणानामीश पारं न याति ॥

आरती गुरुदेव की

ॐ जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी,

जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी ।

ॐ जय-जय

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गुरु मूरत धारी,

वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥

ॐ जय-जय

जप-तप तीरथ संयम दान विविध कीजै,

गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीजै ।

ॐ जय-जय

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे,
नाम जहाज बिठाकर गुरु पल में तारे।

ॐ जय-जय

काम-क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी,
ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारे।

ॐ जय-जय

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावे,
सबका सार बता कर गुरु मारग लावें।

ॐ जय-जय

गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी,
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशय हारी।

ॐ जय-जय

तन-मन-धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजै,
ब्रह्मनन्द परम पद मोक्ष गति दीजै।

ॐ जय-जय

गुरु समर्पण स्तुति



अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥

अब सौंप

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥

अब सौंप

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में।

अब सौंप

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो सब चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में॥

अब सौंप

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अंत समय में प्राण तजूं, साकार तुम्हारे हाथों में॥

अब सौंप

मुझमें-तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥

अब सौंप

जय घोष

परम पूज्य सदगुरुदेव की जय।

पूज्यनीया माता जी की जय।

स्वामी निखिलेश्वरानन्द महाराज की जय।

दादा गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द महाराज की जय।

सिद्धाश्रम के समस्त योगियों की जय।

सिद्धाश्रम साधक परिवार की जय।

ॐ हर हर हर महादेवSSSव!

गोपनीय

तांत्रोक्त

प्रातः मानसिक गुरु पूजन



गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही

शिष्य या साधक प्रातःकाल तांत्रिक रूप से मानसिक गुरु
पूजा करने का अधिकारी होता है। तांत्रोक्त प्रातः
मानसिक गुरु पूजन सर्वथा गोपनीय, दुर्लभ एवं विलक्षण
॥ इसके लिए स्नान, आसन, दीप आदि की आवश्यकता

नहीं होती, अपितु प्रातःकाल पांच बजे उठ कर, अपनी शय्या पर ही पद्मासन में बैठ कर इस गुरु पूजन को सम्पन्न कर लेना चाहिए।

इसके आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिले हैं, नित्य प्रातः उठते ही बिस्तर पर बैठे-बैठे इस प्रकार का मानसिक पूजन करने से शिष्य को स्वतः ही गुरु की सारी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं, और वह सिद्ध बन कर, गुरु का अत्यन्त प्रिय होकर सिद्धाश्रम में प्रवेश कर लेता है।

भूत शुद्धि

तांत्रोक्त पूजन में सर्वप्रथम भूत शुद्धि कर लेनी चाहिए, क्योंकि शैवागम में कहा गया है — “भूत शुद्धि के बिना जप, होम, पूजन, मंत्र-जप आदि का कोई फल नहीं होता, अतः गुरुदेव का ध्यान करने से पहले शरीर और मन को पूर्ण शुद्ध कर लेना चाहिए।

निम्न मंत्र का स्फटिक माला से एक माला जप करने से भूत शुद्धि हो जाती है—

मंत्र

“ॐ हौं”

चौर मंत्र-न्यास

भूत शुद्धि के बाद और मंत्र-न्यास करना चाहिए 50 विभिन्न गण देवताओं को संतुष्ट करने वाला चौर मंत्र ही महामंत्र है, अतः पूर्णता प्राप्ति के लिए चौर मंत्र आवश्यक है।

चौर मंत्र-जप न करने से सभी पूजा-पाठ व्यर्थ हो जाते हैं, अतः गुरु चिन्तन प्रारम्भ करने से पूर्व चौर मंत्र द्वारा शरीर के समस्त छिद्रों को द्वार के समान बन्द कर देना चाहिए, जिससे 50 गण उस जप के फल को नष्ट न कर सकें। चौर मंत्र के लिए शरीर के दस द्वारों पर क्रमशः ध्यान एकाग्र करते हुए बीज मंत्र का यथा संख्या अनुसार जप करें

क्रम	शरीर का स्थान	बीज मंत्र	जप संख्या
1.	हृदय	कों	10 बार
2.	दोनों नेत्र	हीं	10 बार (प्रत्येक पर)
3.	दोनों कान	हीं	10 बार (प्रत्येक पर)

4.	दोनों नाक	हुं	10 बार (प्रत्येक पर)
5.	मुख	स्त्रीं	10 बार
6.	नाभि	क्लीं	10 बार
7.	लिंग-मूल	हसोः	10 बार
8.	गुह्य	ब्लूं	10 बार
9.	भूमध्य	हुं	10 बार
10.	सिर	हीं स्त्री क्लीं	10 बार

ध्यान

इस प्रकार चौर मंत्र का न्यास करने के बाद अपनी नाभि पर दाहिने हाथ के ऊपर बायां हाथ रख कर गुरुदेव का ध्यान करें -

ध्यायेच्छिरसि शुक्लाब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ।
श्वेताम्बर-परिधानं श्वेत माल्यानुलेपनम् ।।
वराभय-करं शान्तं कुरुणामय-विग्रहम्,
स्मेराननं सुप्रसन्नं साधकाभीष्ट-दायकम् ।।

अर्थात् दो नेत्रों वाले, दो भुजाओं वाले, श्वेत वस्त्र पहिने हुए, श्वेत माला धारण किये हुए, गरतक पर चंदन लगाये हुए, वरदान एवं अभय मुद्रा से युक्त, कुरुणामय, देहयुक्त, बाएं हाथ में कमल धारण किये हुए, शक्ति स्वरूपां भगवती के साथ विराजमान, हारयुक्त, अति प्रसन्न, साधकों को इच्छित फल देने वाले श्वेत कमल पर विराजमान सद्गुरु का, मैं अपने आज्ञा चक्र में ध्यान करता हूँ।

शिष्य की शय्या पर बैठे-बैठे ही गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल इन छः उपचारों से संक्षिप्त पूजा करनी चाहिए, परन्तु प्रातः शय्या पर बैठ कर इन सब उपचारों से पूजन करना सम्भव नहीं है, अतः पंच भूतों के बीजमंत्रों द्वारा पंच उपचारों की कल्पना कर गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए।

मानस गुरु पूजा

पृथ्वी को गन्ध अर्थात् चन्दन स्वरूप मानें; पृथ्वी का बीज मां है "ल"। हाथ की कनिष्ठिका उंगली को पृथ्वी कहते हैं, अतः दोनों हाथों की कनिष्ठिका उंगली को

अंगूठे से लगाकर "ल" बीज का उच्चारण करते हुए,
गुरुदेव को गन्ध समर्पित करें।

ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं

गन्धं सशक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः।

इस प्रकार गंध, धूप, पुष्प, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल
समर्पित करें, इसका प्रकरण इस प्रकार है—

1. दोनों हाथों के अंगुष्ठ और कनिष्ठिका उंगलियों के
योग से गन्ध समर्पित करें—

मंत्र :

ऐं कनिष्ठिकाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं

गन्धं सशक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः।

2. दोनों हाथों के अंगुष्ठ और तर्जनी के योग से पुष्प
समर्पित करें—

मंत्र :

ऐं अंगुष्ठाभ्यां हं आकाशात्मकं पुष्पं

सशक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः।

3. दोनों हाथों की तर्जनी और अंगुष्ठ के योग से धूप
समर्पित करें:—

मंत्र :

ऐं तर्जनीभ्यां यं वागात्मकं धूपं

सशक्तिकं श्री गुरवे, समर्पयामि नमः।

4. दोनों हाथों की मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीप
दिखायें:

मंत्र :

ऐं मध्याभ्यां रं हृदयात्मकं दीपं

सशक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः।

5. दोनों हाथों की अनामिका और अंगुष्ठ के योग से
नैवेद्य दें

मंत्र :

ऐं अनामिकाभ्यां वं अमृतात्मकं

नैवेद्यं सशक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः।

6. दोनों हाथ जोड़ कर ताम्बूल प्रदान करें -

मंत्र :

ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां सर्वात्मकं

ताम्बूलं सशक्तिकं श्री गुरवे, समर्पयामि नमः ।

इस प्रकार छः उपचारों से पूज्य गुरुदेव का पूजन कर करन्यास तथा अंगन्यास करें -

	करन्यास	अंगन्यास
श्री	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गु	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वे	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
न	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
मः	अस्त्राय फट्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इसके बाद इसी प्रकार गुरु शब्द के 'गकार' से भी करन्यास और अंगन्यास करें -

	करन्यास	अंगन्यास
गां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
गूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गें	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
गों	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
गः	अस्त्राय फट्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इसके बाद स्फटिक माला से एक माला गुरु मंत्र की करें ।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।

इसके बाद हाथ जोड़ कर गुरु पंक्ति को नमस्कार करें -

वामे—गुरुभ्योनमः, पर गुरुभ्योनमः, परम
गुरुभ्यो नमः, दक्षिणे—परात्पर गुरुभ्यो
नमः, मध्ये—ऐं श्रीं गुरवे नमः

इसके बाद "ऐं" गुरु बीज का 108 बार जप कर
गौ-योनि मुद्रा से जप समर्पण करें।

दाएं या बाएं हाथ की मुट्ठी बांधने पर कनिष्ठिका
उंगली के मूल में, नीचे के भाग में जो योनि की आकृति
होती है, वही गौ-योनि मुद्रा कही जाती है।

जप समर्पण गुरु के चरणों में निम्न मंत्र के द्वारा
करना चाहिए :-

मंत्र :

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृह्णाणास्मत् कृतं जपं ।
सिद्धिर्भवतु मे देव, त्वत् प्रसादान्महेश्वर ॥

फिर "ऐं" बीज मंत्र का तीन बार उच्चारण करते हुए
श्री गुरुदेव को प्रणाम करें।

अखण्डमण्डलाकरं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं मतः ।
तत्त्व-ज्ञानं परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया ॥
चक्ष रुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
नमोऽस्तु गुरवे तस्मै इष्ट-देव-स्वरूपिणे ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार-संज्ञकम् ॥
भव-पाश-विनाशाय ज्ञान-दृष्टि-प्रदर्शिने ।
नमः सद्गुरवे तुभ्यं मुक्ति-मुक्ति प्रदायिने ॥
नराकृति परब्रह्म रूपायाज्ञान-हारिणे ।
कुल-धर्म प्रकाशाय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुकारस्त्वन्धकारश्च उकारस्तेज उच्यते ।
अज्ञानग्रास्कं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

श्री गुरु स्तोत्र

ॐ नमः श्री नारायणाय, श्री महादेव्युवाच
गुरोर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा ।
विशेषस्तु महादेव, तद्वदस्य दयानिधे ॥

श्री महादेव उवाच—

जीवात्मानं यदात्मानं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम् ।
उत्कल-काशी-गंगा-मरणं गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

प्राण देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम् ।
भार्याभिष्टं स्नेहं पुत्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

वानप्रस्थं यति-विध-धर्म पारमहास्यं भिक्षुक-चरितम् ।
साधोः सेवां बहु-सुख-मुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

विष्णोर्भक्तिं पूजन-रिक्तं वैष्णव-सेवां मातरि भक्तिम् ।
विष्णोरिव पितृ-सेवन-योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

प्रत्याहारं चेन्द्रिय-यजनं प्राणायामं न्यास-विधानम् ।
इष्टे पूजा जप-तज-भक्ति ने गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

काली, दुर्गा, कमला, भुवना, त्रिपुरा, भीमा, बगला पूर्णा ।
श्री मातंगी, धूमा, तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

मात्स्यं कौर्म श्रीवाराहं नरहरि-रूपं वामन-चरितम् ।
नर-नारायण-चरितं योग न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

श्री भृगुदेवं श्री रघुनाथं श्री यदुनाथं बौद्धं कल्क्यम् ।
अवतारा दस वेद-विधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

गंगा काशी कांची द्वारा माया योध्यावन्ती मथुरा ।
यमुना रेवा पुष्कर-तीर्थ न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

गोकुल-ममनं मोपुर-रमणं श्री वृन्दावन-मधुपुर-रटनम् ।
एतत् सर्वसुन्दरि मानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

तुलसी-सेवा हरिहर-भक्तिः गंगासागर-संगम-मुक्तिः ।
किं परमधिकं कृष्ण भक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्ष-ज्ञानी सोऽपि च धन्यम् ।
ब्रह्माण्डान्तर्गद यद्-ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

(इति वृहद्-विज्ञान-परमेश्वर-तन्त्र त्रिपुरा-शिव सम्वादे श्रीगुरो स्तोत्रम्)